जई की खेती

उत्तरी/पूर्वी मैदानी क्षेत्रों में जई हरे चारे में सभी पशुओं को अकेले या बरसीम के साथ 1:1 या 2:1 के अनुपात में मिलाया जाता है। इस क्षेत्र में सामान्यतया ज्वार, बाजरा, मक्का या मध्यम समय से पकने वाली धान के बाद खेती करते है।

भूमि :

जई के लिए दोमट या भारी दोमट भूमि जहॉ जल निकास का उचित साधन हो उपयुक्त है।

भूमि की तैयारी :

प्रायः खरीफ की फसल के बाद जई की बुवाई की जाती है। अतः पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से व दो तीन जुताइयां कल्टीवेटर से करके पाटा लगा लें।

उन्नतिशील प्रजातियाँ :

प्रजातियॉ	हरा चारा	उपयुक्त क्षेत्र
एकल कटाई		
केन्ट	400-475	सम्पूर्ण उ. प्र.
ओ.एस-6	450-500	सम्पूर्ण उ. प्र.
बुंदेल जई-99-2 (जे.एच.ओ. 99-2)	500-550	उ. प्र. की पश्चिमी व पूर्वी क्षेत्र
नरेन्द्र जई-1 (एन.डी.ओ.-1)	500-525	ऊसर क्षेत्र हेतु सम्पूर्ण उ.प्र.
बहु कटाई		
केन्ट,	450-500	सम्पूर्ण उ.प्र.
यू.पी.ओ.-212	450-500	सम्पूर्ण उ. प्र.
बुंदेल जई-822 (जे.एच.ओ. 822)	450-550	उ.प्र. का मध्य मैदानी व बुंदेलखण्ड क्षेत्र
बंदेल जई-851 (जे.एच.ओ. 851)	450-550	सम्पूर्ण उ.प्र.

बीज दर :

क.	कूड़ों में बुआई	-	
	समय से बुआई	-	75-80 किग्रा./हे.
	पिछैती बुआई	-	100-110 किग्रा./हे.
ख-	छिटकवॉ		
	समय से बुआई	-	110-115 किग्रा./हे.
	पिछैती बुआई	-	120-125 किग्रा./हे.

बुआई का समय एवं विधि :

समय	-	अक्टूबर का प्रथम पखवारा से नवम्बर का प्रथम पखवारा तक
विलम्ब से बुआई	-	नवम्बर का अन्तिम सप्ताह तक।

कूड़ों में बुवाई 20 सेमी. पर लाइनों में करते है। बुआई के बाद खेत को लम्बी-2 क्यारियों में बॉट लेते है। इससे बैलों या ट्रैक्टर चालित मशीनों से भी कटाई सम्भव है।

उर्वरक :

प्रति हे. 60 कि.ग्रा. नत्रजन और 40 कि.ग्रा. फास्फोरस अन्तिम जुताई के समय भूमि में मिला दे। 20 कि.ग्रा. नत्रजन दो बार बराबर मात्रा में पहली बुवाई के 20-25 दिन बाद छिड़क कर सिंचाई कर देना चाहिए। तथा दूसरी मात्रा इसी तरह पहली कटाई के बाद देनी चाहिए। जिस भूमि में सल्फर कम हो उसमें 20 किग्रा. सल्फर का प्रयोग अच्छी उपज देता है।

सिंचाई :

पलेवा करके खेत को तैयार करें। आगे की सिंचाइयां लगभग एक माह के अन्तर पर करना चाहिए। कल्ले निकलने तथा फूल आने के समय सिंचाई आवश्यक है।

कटाई :

एकल कटाई के लिए	-	50 प्रतिशत फूल की अवस्था मे।
बहु कटाई के लिए	-	पहली कटाई बोने के 50-55 दिन पर दूसरी 50 प्रतिशत बाली निकलने पर

कटाई 8-10 सेमी की जमीन के ऊपर करने से कल्ले अच्छे निकलते है। बीज लेने के लिए पहली कटाई के बाद फसल छोड़ दें।

उपज :

हरा चारा 50-55 टन /हे. यदि बीज उत्पादन करते है तो हरा चारा 25 टन लगभग, बीज 15-20 कु./हे. एवं भूसा 20-25 कु./हे. प्राप्त हो सकता है।

फसल सुरक्षा :

अ. **आवृत कण्डुआ रोगः** बीज को 3 ग्राम थीरम या जिंकमैगनीज कार्बोनेट 2.5 ग्रा/कि. की दर से उपचारित कर लेना चाहिए।

ब. **दीमक :** एक मात्र कीट दीमक लगता है। इससे बचाने के लिए क्लारोपायरीफास 2-3 ली./हे. की दर से सिंचाई के पानी के साथ प्रयोग करना चाहिए।